E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 5 | May 2025

बीकानेर जिलें में स्थायी पर्यटन विकास एवं डिजिटल परिवर्तन का प्रभाव : आर्थिक समृद्धि की संभावनाओं का अध्ययन

डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत [1], राजेश स्वामी [2]

[1] मार्गदर्शक व सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर

[2] पीएचडी शोधार्थी, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) एवं सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, सराड़ा (सलूम्बर), उदयपुर

शोध सार-

वर्तमान समय में पर्यटन आनंद या अवकाश के माध्यम के साथ सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक सशक्त उपकरण बन चुका है। राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्तुत राजस्थान पर्यटन नीति, 2020 के अंतर्गत सतत पर्यटन और तकनीकी नवाचारों को प्रमुखता देते हुए पर्यटन क्षेत्र को स्थानीय रोजगार, पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम बनाने का प्रयास किया गया है। राजस्थान का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध बीकानेर जिला पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है जहाँ पर्यटन के स्थायी विकास एवं डिजिटल परिवर्तन के संयुक्त प्रभावों का विश्लेषण करने की महत्ती आवश्यकता है। बीकानेर जिला अपनी विशिष्ट स्थापत्य कला, लोक संस्कृति, ऊँट महोत्सव और धार्मिक स्थलों के साथ पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ रखता है। यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि किस प्रकार डिजिटल तकनीकें जैसे- ऑनलाइन बुकिंग, वर्चुअल टूरिज़्म, ई-मार्केटिंग और स्मार्ट गाइडिंग सिस्टम के प्रयोग से बीकानेर जिले के पर्यटन अनुभव को अधिक सुलभ, सुरक्षित और समावेशी बनाया जा सकता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि स्थायी पर्यटन नीतियाँ स्थानीय कारीगरों, महिलाओं, युवाओं और पारंपरिक व्यवसायों को आर्थिक रूप से सशक्त करती हैं।

बीज शब्द- स्थायी पर्यटन, डिजिटल परिवर्तन, आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक विरासत, स्मार्ट पर्यटन, ईको-टूरिज्म, पर्यावरणीय संतुलन, पर्यटन विकास

पर्यटन आधुनिक युग की एक जटिल और बहुआयामी गतिविधि बन चुका है जिसकी जड़ें आदि मानव की घुमंतू प्रवृत्ति में निहित हैं। प्रारंभिक दौर में मानव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भ्रमण करता था परंतु सभ्यता के विकास के साथ पर्यटन में धार्मिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक और ज्ञानवर्धक उद्देश्य भी जुड़ते गये। आज पर्यटन केवल घूमने-फिरने तक सीमित न रहकर विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, खानपान और जीवनशैली को जानने-समझने का सशक्त माध्यम बन गया है। यह व्यक्ति को उसके सीमित परिवेश से बाहर निकालकर वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

"पर्यटन दो शब्दों से मिलकर बना है परि+अटन जिसमें परि का अर्थ है चारों ओर एवं अटन का अर्थ है घूमना या भ्रमण करना।"[1] पर्यटन के लिए अंग्रेजी में TOURISM शब्द का प्रयोग किया गया है। TOUR शब्द की उत्पत्ति TORNOS (टारनोस) लेटिन भाषा के शब्द से हुई है। टारनोस शब्द एक औजार (मशीन) के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसे घूमते पहिये पर लगाकर व्यक्ति भ्रमण करता रहता है।

समय के साथ पर्यटन ने पारंपरिक रूप से हटकर नये-नये स्वरूप अपनाए है जिनमें अनुभवात्मक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहसिक, ग्रामीण और औद्योगिक पर्यटन शामिल हैं। "सर्वप्रथम पर्यटन शब्द को 1643 में एक स्थान से अन्यत्र या करना, देशाटन करना या मनोरजंन हेतु यात्रा करने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया।"[2] भारतीय संस्कृत साहित्य के अनुसार "पर्यटन का अभिप्राय आर्थिक, धार्मिक, शिक्षा प्राप्ति, आमोद प्रमोद, मनोरंजन आदि से संबंधित क्रियाओं हेतु घर से बाहर की यात्रा करना है।"[3]

फ्रांसिस बेकन ने कहा है "पर्यटन युवा मानस में शिक्षा तथा प्रौढ मानस में अनुभव प्रदान करता है। पर्यटन से शिक्षा प्राप्त करना, आज सभ्य संसार का अंग बन गया है। पर्यटन रोजमर्रा की जिंदगी से अलग हटकर कुछ अलग आनंद प्रदान करता है।"[4]

पर्यटन उद्योंग सार्वजनिक और बुनियादी ढ़ाँचे पर अत्यधिक निर्भर करता है। बिना परिवहन जाल, संसाधन, होटल संरचना, पर्यटकों का सम्मान एवं सुरक्षा के अभाव में पर्यटन उद्योंग कभी भी राज्य की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका नहीं निभा सकता है। इसलिए परिवहन ढ़ाँचे का विकास अत्यन्त आवश्यक है। राजस्थान राज्य परिवहन संरचना की दृष्टि से विकास के पर्यटन स्थल तक पहुंच के लिए तंत्रिका तंत्र का कार्य करता है।[5]

वर्तमान समय में बीकानेर जिले में जहाँ पारंपरिक संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत की प्रचुरता है वहाँ पर्यटन क्षेत्र की समुचित योजना और नीति निर्माण के माध्यम से सतत आर्थिक उन्नति की संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक हैं। बीकानेर जिले का संपूर्ण क्षेत्र मरुस्थलीय परिस्थितियों से घिरा हुआ है जहाँ वर्षा की अल्पता, धूल भरी तेज़ आँधियाँ, प्रखर धूप, ऊसर भूमि की अधिकता, बार-बार पडने वाले भीषण अकाल तथा सिंचाई के सीमित साधन जैसी अनेक प्राकृतिक चुनौतियां मौजूद है।

बीकानेर राज्य थार मरुस्थल के ऊँचे एवं विशाल टीलों में स्थित था। राज्य में वर्षा बहुत कम होती थी और किसी न किसी बड़े क्षेत्र में सूखे एवं अकाल की स्थिति बनी रहती थी। राज्य में बहुत कम जनसंख्या निवास करती थी तथा खेती भी बहुत कम होती थी। पशुपालन एवं पशु-आधारित छोटे-छोटे उद्योग राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के मुख्य आधार थे। अकाल एवं सूखे के कारण प्रति वर्ष सैंकड़ों परिवार अपने पशुओं को लेकर दूसरे राज्यों में चले जाते थे। उनमें से बहुत से परिवार कभी भी लौट कर नहीं आते थे। इस कारण वर्षा अच्छी होने पर भी खेत खाली रह जाते थे और राज्य को प्रजा से बहुत कम भूराजस्व एवं कर मिल पाता था। इस पर भी बीकानेर के राजाओं ने बीकानेर राज्य में रेल, डाक, नहर, सड़क, विद्यालय, बाजार, कारखाने आदि का विकास करके प्रजा के जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास किया।[6]

ऐसे प्रतिकूल वातावरण में राव बीका ने अपने साहस, दूरदर्शिता और सशक्त नेतृत्व क्षमता के बल पर सन् 1488 में एक नवीन राज्य की स्थापना कर उसे स्थायित्व प्रदान किया। बीकानेर जिला भारत के राजस्थान राज्य के उत्तर पश्चिमी भाग में है, बीकानेर जिले के अक्षांश और देशांतर क्रमशः 28 डिग्री 1 मिनट उत्तर से 63 डिग्री 18 मिनट पूर्व तक है, बीकानेर जिले की समुद्रतल से ऊंचाई 242 मीटर है, बीकानेर जिला जयपुर से 335 किलोमीटर उत्तर पश्चिम की तरफ है और दिल्ली से 434 किलोमीटर पश्चिम की तरफ है।

बीकानेर जिले का क्षेत्रफल 30247 वर्ग किलोमीटर है, 2011 की जनगणना के अनुसार बीकानेर जिले की जनसँख्या 2367745 और जनसँख्या घनत्व 78 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, बीकानेर जिले की साक्षरता 66% महिला पुरुष अनुपात 903 महिलाये प्रति 1000 पुरुषो पर और 2002 से 2011 के बीच जनसँख्या विकास दर 42% है। बीकानेर जिले की स्थलाकृति, संस्कृति, परिधान, त्योहार, मेले, जीवनशैली और कलात्मक विविधता

विश्वभर के पर्यटकों को निरंतर आकर्षित करती रही है। यहाँ की स्थापत्य कला, साहित्यिक परंपरा, ऐतिहासिक भवन और सभ्यता के पुरातात्विक चिन्ह आज भी अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं।

जोधपुर-बीकानेर-जैसलमेर मरु पर्यटक त्रिभुज की स्थापना ने बीकानेर जिले में पर्यटन विकास को नई दिशा और गति प्रदान की है जिसके परिणामस्वरूप यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और मरुनगरी ने देश के पर्यटक मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। राजस्थान के पश्चिमी भाग और थार मरुस्थल के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित बीकानेर भारत-पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटा हुआ एक सीमांत जिला है जहाँ शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु के बावजूद पर्यटन व्यवसाय के लिए अत्यंत अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं।[7]

यहाँ के मरुस्थलीय भू-आकृतिक स्वरूप, विविध वन्यजीव, प्राचीन ऐतिहासिक धरोहरें जैसे- किले, हवेलियाँ, महल, पारंपरिक ग्रामीण जीवन, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, लोकगीत, नृत्य, वेशभूषा और साहित्यिक संस्कृति विदेशी व देशी पर्यटकों को अत्यधिक आकर्षित करती है। "अध्ययन क्षेत्र में स्थित जूनागढ़ किला, लालगढ़ महल, गजनेर महल, लक्ष्मीनाथजी मंदिर, भाण्डासर जैन मंदिर, रामपुरिया हवेली, कोडमदेसर भैरवनाथ मंदिर, करणीमाता मंदिर (देशनोक), राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, श्रीकोलायत जी, देवीकुण्ड सागर तथा मुकाम (नोखा) जैसे प्रमुख दर्शनीय स्थल बीकानेर जिले को एक समृद्ध पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं।"[8]

राजस्थान पर्यटन नीति, 2020 व्यापक दृष्टिकोण को अपनाते हुए पर्यटन क्षेत्र के बहुआयामी विकास हेतु एक समन्वित रणनीति प्रस्तुत करती है। यह नीति न केवल पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण को महत्व देती है बल्कि यह पर्यटन को आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सशक्तिकरण का साधन मानकर इसे डिजिटल तकनीकों, कौशल विकास और नवाचारों से जोड़ने का प्रयास करती है। इस नीति के माध्यम से राज्य सरकार ने 'स्थायी पर्यटन' (Sustainable Tourism) की अवधारणा को व्यवहार में लाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है जिससे पर्यावरण के साथ सामंजस्य रखते हुए स्थानीय लोगों को रोजगार, प्रशिक्षण और उद्यमिता के अवसर प्राप्त हो सकें।

बीकानेर जिले में इस नीति के प्रभाव को समझना अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यहाँ सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक जीवनशैली और प्राकृतिक सौंदर्य के विविध रूप एक साथ विद्यमान हैं। बीकानेर जिले में पर्यटन का सतत विकास स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने के साथ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आर्थिक असंतुलन को भी दूर करने में सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए रेगिस्तानी पर्यटन (Desert Tourism), ईको-टूरिज्म, धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से स्थानीय शिल्पकारों, कलाकारों, महिलाओं और युवाओं को रोजगार मिल सकता है साथ ही पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी यदि भवन निर्माण, जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और जैविक संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए तो यह पर्यटन क्षेत्र को पर्यावरण संवेदनशील एवं दीर्घकालिक बना सकता है।

वहीं दूसरी ओर डिजिटल तकनीकी परिवर्तन ने पर्यटन को एक नए युग में प्रवेश दिलाया है जहाँ पर्यटक अपने स्मार्टफोन से ही गंतव्य का चयन, होटल बुकिंग, यात्रा मार्ग, स्थानीय भोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गाइडेड टूर की समस्त जानकारी प्राप्त कर सकता है। बीकानेर में यदि डिजिटल प्लेटफॉर्म, वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड गाइडेंस, QR आधारित सूचना प्रणाली और लोकल मार्केट के लिए ई-कॉमर्स का विकास किया जाये तो इससे पर्यटन अनुभव में वृद्धि होगी एवं स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पहचान भी मिलेगी। राजस्थान

पर्यटन नीति, 2020 में स्मार्ट पर्यटन की संकल्पना को स्थान दिया गया है जो बीकानेर जिले के लिए भी अत्यंत उपयोगी साबित हो सकती है।

पर्यटन पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र पर्यटन उत्पाद, सेवाओं और गंतव्यों का विपणन और संवर्धन है। आभासी वास्तविकता जैसे कई तकनीकी अनुप्रयोगों ने गंतव्यों की संभावित पर्यटकों की पसंद पर निर्णय लेने और निर्णय लेने के लिए स्थानों की अमूर्तता के मुद्दों को कम कर दिया है। सोशल मीडिया की शुरुआत गंतव्य विपणन, प्रचार और प्रबंधन में एक बड़ी पारी बनकर सामने आया और आज फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर्यटन और संबंधित सेवा उत्पाद के विपणन में अहम भूमिका निभाते हैं।[9]

कुछ ही समय के भीतर सोशल मीडिया अपनी पसंद के गंतव्य में संभावित पर्यटकों का महत्वपूर्ण प्रभाव बन गया। इस रूप में आज के पर्यटन उद्योग को कई वेब-आधारित अनुप्रयोगों, क्लाउड कंप्यूटिंग, एकीकृत संचार, सोशल मीडिया, ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसी (ओटास), बिगडेटा, नियर फील्ड कम्युनिकेशन, भविष्य बताने वाले विश्लेषण, बुद्धिमान व्यक्तिगत सहायता, पर्यटक अनुभव आदि डिजिटल सेवाओं द्वारा आकार दिया गया है।

स्थायी पर्यटन का अर्थ केवल पर्यटकों की बढ़ती संख्या से नहीं है वरन् पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक संसाधनों का संतुलित उपयोग करते हुए स्थानीय समुदाय को लाभ पहुँचाना है। स्थायी पर्यटन मॉडल के अंतर्गत ऐसे उपाय आवश्यक हैं जो इन संसाधनों का सतत दोहन करें और स्थानीय जीवन शैली के साथ सामंजस्य बनाये रखें। बीकानेर जिले के पर्यटन परिदृश्य में स्थायी विकास और डिजिटल परिवर्तन के संयुक्त घटकों के समुचित क्रियान्वयन से स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि एवं सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गौरव और पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में भी प्रगति संभव है।

यह अध्ययन उन संभावनाओं और चुनौतियों की भी पड़ताल करता है जो बीकानेर को एक आदर्श पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित करने की राह में उपस्थित हैं। यदि नीति, जन-भागीदारी, शिक्षा और तकनीक के स्तर पर उचित समन्वय स्थापित किया जाए तो बीकानेर जिला आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक सशक्त और सतत विकासशील मॉडल बन सकता है। बीकानेर जिले जैसे अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्र में पानी की कमी, पर्यावरणीय दबाव और सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है। बीकानेर जिले में ऊँट सफारी, रेगिस्तानी उत्सव, हस्तशिल्प और लोकनृत्य जैसे अनुभवात्मक पर्यटन गतिविधियाँ विकसित की जा सकती हैं जो पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति से जोड़ती हैं।

इसके अतिरिक्त ईको-टूरिज्म और होम-स्टे जैसे विकल्पों से ग्रामीण क्षेत्रों को भी पर्यटन विकास की मुख्यधारा में लाया जा सकता है। यह स्थानीय लोगों को रोजगार और आय का स्रोत प्रदान करता है जिससे उन्हें पलायन की आवश्यकता नहीं पड़ती।[10] स्थायी पर्यटन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि पर्यटकों को शिक्षित किया जाये कि वे स्थानीय संस्कृति, रीति-रिवाजों और पर्यावरणीय संतुलन का सम्मान करें। साथ ही प्लास्टिक-मुक्त ज़ोन, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण और अक्षय ऊर्जा का प्रयोग जैसे उपायों को प्राथमिकता दी जाये। बीकानेर जिले में ग्रीन इनिशिएटिव्स पर्यावरण की रक्षा करते हुए पर्यटन को दीर्घकालीन बना सकते है।

राजस्थान पर्यटन नीति, 2020 में विशेष रूप से इस बात पर बल दिया गया है कि स्थानीय संसाधनों, कला और संस्कृति को प्राथमिकता दी जाए। बीकानेर जिले में यदि पर्यटन नीति को स्थानीय जरूरतों और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से लागू किया जाये तो यह शहर एक आदर्श सतत पर्यटन गंतव्य बन सकता है। इसके लिए

स्थानीय प्रशासन, पर्यटन विभाग और समुदायों के बीच सक्रिय सहयोग और समन्वय की आवश्यकता है। डिजिटल तकनीक का समावेश भी स्थायी पर्यटन को बल प्रदान करता है। बीकानेर जिले में वर्चुअल गाइड, मोबाइल ऐप, ऑनलाइन टिकटिंग, ई-मार्केटिंग और डिजिटल हेरिटेज आर्काइव्स के माध्यम से पर्यटन अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है।

नये अनुभवों की बढ़ती मांग को देखते हुए वर्तमान में कई निजी हितधारकों के द्वारा रोमांचक तथा नवाचार आधारित आनुभविक पर्यटन उत्पाद उपलब्ध कराये जा रहे हैं जिनके विपणन एवं संवर्धन हेतु राज्य सरकार के सहयोग की आवश्यकता है। विभाग ऐसे सभी उत्पादों का डाटा बेस तैयार करेगा तथा इन पर ई-ब्रोशर प्रकाशित कर अपने वेबपोर्टल तथा सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से इनसे संबंधित सूचना का प्रचार करेगा। विभाग ऐसे उत्पादों के प्रमाणीकरण हेतु दिशा-निर्देश भी तैयार करेगा। इस नीति में उल्लेखित अति-प्राथमिकता क्षेत्र के अन्तर्गत अनुभवात्मक पर्यटन के नये उत्पादों को प्रस्तुत करने वाले स्टार्ट-अप्स के लिये एक प्रोत्साहन योजना बनाई जायेगी।[11]

बीकानेर जिले की जैव विविधता और मरुस्थलीय प्राकृतिक सौंदर्य को संरक्षित रखने हेतु सतत पर्यटन नीतियाँ लागू करना आवश्यक है। स्थानीय समुदायों को पर्यटन गतिविधियों में शामिल कर उनके आर्थिक विकास को बल दिया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), वर्चुअल टूरिज्म (Virtual Tourism) और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी तकनीकों का उपयोग बीकानेर जिले के किले, हवेलियों और सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है। इको-फ्रेंडली यात्रा साधनों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सकता है। सरकार, उद्योग और पर्यटकों के संयुक्त प्रयासों से बीकानेर में हरित व डिजिटल पर्यटन को प्रोत्साहन देकर सतत विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

बीकानेर जिले में स्थायी पर्यटन की सफलता पर्यटन नीति, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय सहभागिता और स्थानीय हितों के बीच संतुलन पर निर्भर करती है। यदि पर्यटन गतिविधियाँ ऐसी हों जो संसाधनों का न्यूनतम उपयोग करते हुए अधिकतम सामाजिक और आर्थिक लाभ दे सकें तो बीकानेर जिला पर्यटन के माध्यम से एक मॉडल शहर के रूप में उभर सकता है।

प्रस्तुत शोध बीकानेर जिल में पर्यटन विकास की व्यवहारिक स्थितियों, संभावनाओं और चुनौतियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा नीति-निर्माताओं, स्थानीय प्रशासन और पर्यटन उद्यमियों के लिए आवश्यक सुझाव भी प्रदान करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष पर्यटन को एक समावेशी, सतत और तकनीक आधारित आर्थिक विकास के मॉडल के रूप में प्रस्तुत करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास हैं।

संदर्भ सूची-

1. व्यास प्रकाश चन्द्र : विश्व प्रसिद्ध पर्यटन, समता प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 8-9
2. व्यास डॉ. राजेश कुमार : पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2013, पृ. 6
3. नेगी जगमोहन *: पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त,* तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ. 3
4. व्यास डॉ. राजेश कुमार : पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2013, पृ. 7
5. वही, पृ. 7
6. गुप्ता मोहनलाल : *बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन,* शुभदा प्रकाशन, जोधपुर, 2023, भूमिका से

7. प्रेमचंद गोस्वामी : *राजस्थान संस्कृति कला एवं साहित्य*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2006, पृ. 37
8. नीरज, जयसिंह एव शर्मा भगवती: राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000, पृ. 42
9. व्यास राजेश कुमार : *सांस्कृतिक राजस्थान*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019 पृ. 18
10. राजस्थान पर्यटन नीति, 2020
11. राजस्थान पर्यटन नीति, 2020